BOOKLET-II

STORIES & RIDDLES

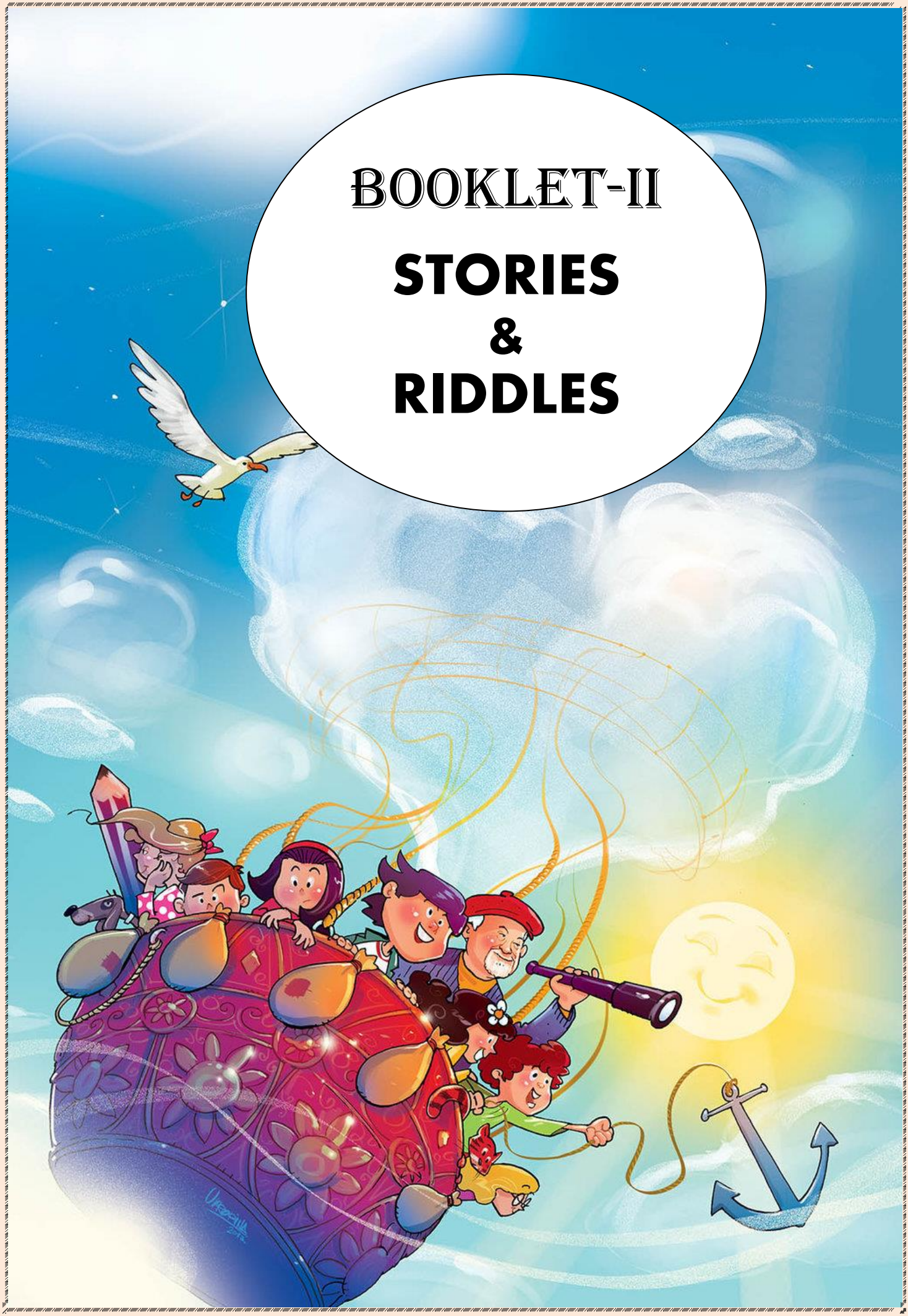

STORIES AND RIDDLES

Child Care Centre
National Institute of Public Cooperation and Child Development
5, Siri Institutional Area, HauzKhas, New Delhi-110016

INDEX

S.No.	Title of the Story	Page No.
1	मेरा पलंग	7
2	राजू की कहानी	8
3	पवन क्यों खोया	10
4	नटखट टीनू	11
5	सोमू की परेशानी	12
6	जामुन का पेड	14
7	बन्दर और मगरमच्छ	16
8	जंगल का राजा कौन	18
9	भयभीत हुए बनबन और पिग्सी	20
10	बकरी और बूढ़े बाबा	22
11	शेर और चूहा	24
12	उछलू बन्दर और धीरू कछुआ	26
13	नीली पीली और लाल मछली	28
14	गुड़िया और तीन भालू	30
15	गिलहरी का कुल्लड	33
16	दो तोते	35
17	मैं भी	36
18	मैना और कौआ	38
19	चीं चीं चिड़िया	40
20	मच्छर	41
21	फूल और शरारती बच्चे	43
22	माली और बन्दरों की टोली	45
23	पुलिसवाला	47
24	दरजी और हाथी	48
25	चुनमुन चिड़िया व किसान	50
	बूझो पहेलियां	53

मेरा पलंग

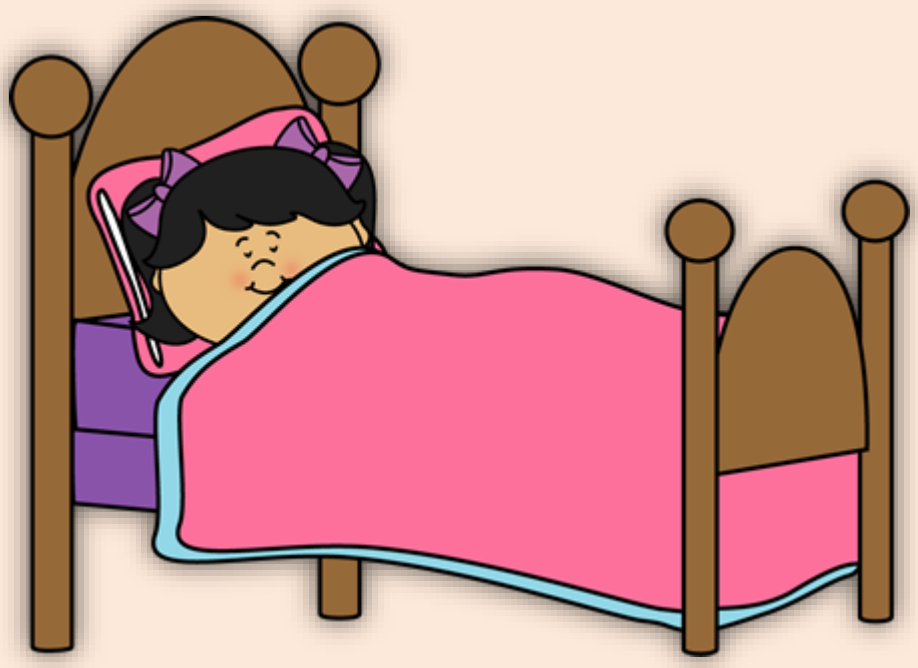

मेरी मां के कमरे में एक बड़ा सा पलंग है मुझे पलंग के ऊपर कूदने में बहुत मजा आता है । पर मां मुझे पलंग से नीचे उतार देती है । जब मां काम पर जाती है तो मैं चुपके से पलंग के ऊपर चढ़ जाती हूं और ऊपर नीचे छलांग लगाती हूं । जब मां घर आती है तो मैं जल्दी से पलंग के नीचे छिप जाती हूं । मां मुझे ढूंढ़ती है पर मैं उनको मिलती ही नहीं । नीचे से निकल कर मैं मां की गोद में बैठ जाती हूं । मां मुझे बहुत प्यार करती है । रात को मैं पलंग के ऊपर लेट जाती हूं । मां मेरे ऊपर चादर डाल देती है । मैं चादर के नीचे मजे में सो जाती हूं ।

राजू की कहानी

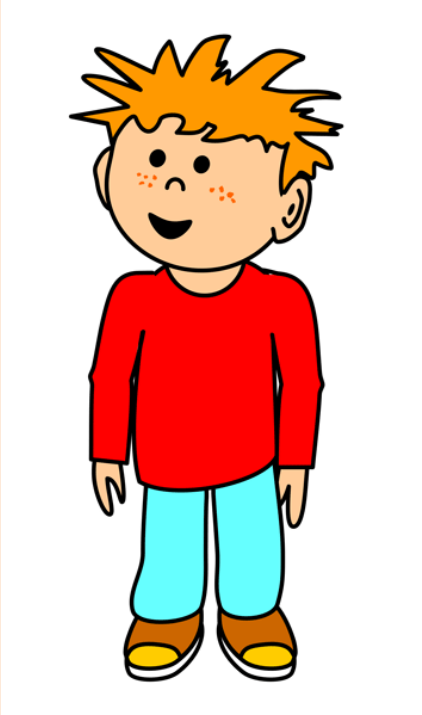

राजू नाम का एक लड़का था । सुबह उठकर वह अपना मुंह नहीं धोता था, आंख, नाक, बाल भी साफ नहीं करता था और गन्दे कपड़े पहनकर वो स्कूल में जाता था । स्कूल के बाहर कुछ बच्चे खेल रहे थे । बच्चों ने कहा–हम तुझे अपने साथ खेलने नहीं देंगे क्योंकि तू स्कूल में गन्दा आया है – तूने हाथ, पांव, मुंह, बाल कुछ भी साफ नहीं किया । राजू वापस जाने लगा, रास्ते में उसको एक मुर्गा मिला, उसने मुर्गे को कहा – मुर्गे भाई, मुर्गे भाई तुम मुझे अपने साथ खेलने दोगे क्या ? मुर्गे भाई ने ना कहा । तू गन्दा लड़का है तूने हाथ, मुंह, पांव, आंखे, नाक, बाल साफ नहीं किए इसलिए मैं तुझसे खेलने के लिये मना करता हूं । फिर से राजू अकेला आगे चला उसको रास्ते में एक बकरी मिली । बकरी को राजू ने पूछा – बकरी बहन बकरी बहन तुम्हारे सबके साथ मैं खेलू क्या ? बकरी ने कहा तू गन्दा लड़का है हाथ, पांव, मुंह, आंखे, नाक, बाल कुछ भी साफ नहीं किया, मैं तुझ से नहीं खेलूंगी । राजू फिर उदास होकर आगे चला उसको रास्ते में बन्दर मिला – बन्दर भाई बन्दर भाई क्या तुम मुझे अपने साथ खेलने के लिए नहीं लेगें ? बन्दर ने भी ना बोला – राजू तू गन्दा लड़का है, हाथ, पांव, मुंह, नाक, कान, बाल कुछ साफ नहीं करता इसलिए मैं तुझसे नहीं खेलूंगा । राजू फिर आगे चला कोई भी उसको खेलने के लिए नहीं बुलाता था । राजू एक बड़े पत्थर पर बैठ कर रोने लगा । क्यों भाई क्यो रोते हो ? एक सुअर ने पूछा । राजू ने कहा – मेरे साथ कोई भी खेलता नहीं । राजू की बात सुनकर सुअर ने कहा मैं तुम्हारे साथ

खेलूंगा । तूने मुंह नहीं धोया, मैंने भी नहीं धोया । तू नहाया नहीं मैं भी नहीं नहाया । तेरे बाल साफ नहीं है वैसे मेरे भी बाल साफ नहीं है तुम मत रोओ तू मेरा भाई है मैं तेरा सुअर भाई हूं । जैसे सुअर उसको छूने के लिए पास आया वैसे ही राजू घर भाग गया । उसने मां को कहा मां – मां मुझे जल्दी से नहाने के लिये पानी व साबुन दो, इससे पहले मैं अच्छी तरह से ब्रश करके दांत साफ करता हूं । फिर उसने नाक, दांत, कान साफ कर नहाना शुरू किया । अच्छे धोये हुए साफ कपड़े पहने और बाहर गया जहां उसके दोस्त बाहर खेल रहे थे उसने पूछा – मैं तुम्हारे साथ खेलने आऊ क्या ? हां जरूर आओ उसके दोस्तो ने कहा राजू तू आज कितना सुन्दर व अच्छा लड़का दिख रहा है अब हम तुझे अपने साथ खेलाएंगें ।

सीखने योग्य बात– *जब राजू सफाई करके आया तब वह सबको पसंद आया । इसलिए रोज शरीर की सफाई करना आवश्यक है ।*

पवन क्यों खोया

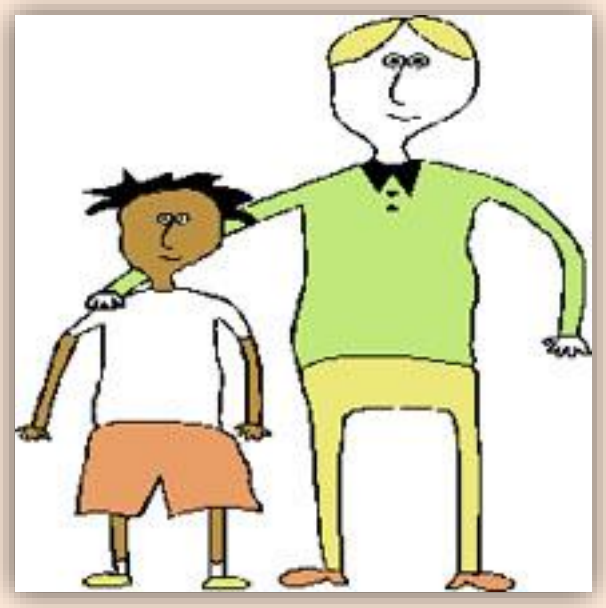

एक समय की बात है – खेड़ी गांव में रामलाल नाम का एक किसान रहता था। उसका एक छोटा सा बेटा था बेटे का नाम था–पवन । पवन को इधर–उधर घूमना अच्छा लगता था । एक दिन पवन के पिताजी ने पवन को मेले में घूमाने की बात कही । पवन यह सुनकर बहुत खुश हुआ और जल्दी से अच्छे कपड़े और जूते पहन कर और बाल बनाकर मेला जाने को तैयार हो गया ।

पिता जी और पवन दोनों मेला देखने गये । वहां खूब भीड़ थी, पवन मेले में खूब घूमा और मिठाई भी खाई । कठपुतली का नाच देखा, तरह–तरह के झूले–झूले, पर शाम होने पर भीड़ में खो गया । पिता जी उसे दिखाई नहीं दिये तो वह डर कर रोने लगाा । उसे रोता देखकर पास के गांव के एक आदमी ने उसके रोने का कारण पूछा । उसका नाम पूछा ! पर घबराहट के कारण पवन अपना नाम भूल गया अपने पिता का और गांव का नाम भी नहीं बता सका और जोर–जोर अज़गर से रोने लगा । तब वह आदमी जिसका नाम श्यामलाल था पवन को अपने घर ले गया । दो दिन तक पवन वहीं रहा । फिर तीसरे दिन पवन के पिताजी उसे खोजते हुए उस गांव भी पहुंचे और लोगों से पूछने पर उन्हें पता चला कि उसी गांव के श्यामलाल के पास उसका बेटा था पवन अपने पिताजी को देखकर बहुत खुश हुआ । पिताजी ने श्यामलाल को धन्यवाद दिया और पवन को लेकर अपने घर आ गए । इसलिए बच्चों को अपना नाम, अपने पिता का नाम और घर का पता जानना चाहिए ।

नटखट टीनू

टीनू एक छोटा लड़का था । वह बहुत शैतानी करता था । उसे घर के सामान को तोड़फोड़ करने में बड़ा मजा आता था कभी वह नल खुला छोड़ देता और कभी घर के सामान को इधर–उघर पटक देता था । यह सब टीनू के मां–पिताजी को मालूम नहीं था, क्योंकि वह दोनो काम पर जाते थे । एक दिन उसने अपने दादा–दादी को दवा की शीशी और ऐनक तोड़ दी । इस पर उसके दादा–दादी नाराज़ हुए । उन्होंने टीनू को डांट लगाई और शाम को उसके मां–पिताजी को उसकी शरारत के बारे में बताया । लेकिन जब टीनू से उसके मां पिताजी ने शैतानी करने का कारण पूछा तो टीनू ने झूठ बोला : नहीं नहीं मां पिताजी मैं तो स्कूल से आकर खेला और फिर सो गया था । यह सुन कर उसके मां–पिताजी ने उसकी शरारत देखने की ठानी । अगले दिन उन्होंने अपने दफ्तर से छुट्टी ली और टीनू को नहीं बताया । जब टीनू स्कूल से आया तो उसने रोज की तरह घर में उधम मचाना शुरू कर दिया । जब वह घर की घड़ी की तरफ हाथ बढ़ा ही रहा था कि उसके पिताजी ने उसे आवाज दी । टीनू यह तुम क्या कर रहे हो ? आवाज़ सुनते ही टीनू घबरा गया और शर्म के मारे उसका सिर झुक गया । फिर उसने मां–पिताजी और दादा–दादी से माफी मांगी और बोला कि वह आगे से कभी भी तोड़–फोड़ नहीं करेगा और झूठ भी नहीं बोलेगा । इस पर उसे घर में सबने प्यार किया और उस दिन के बाद टीनू ने कभी झूठ नहीं बोला और न ही उसने ऐसी शरारत की ।

सीखने योग्य बात– *हमें कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए या झूठ बोलना बुरी बात है ।*

सोमू की परेशानी

एक लड़का था –सोमू बहुत ही समझदार और प्यारा बच्चा था; मम्मी – पापा का कहना मानता था, दोस्तों के साथ मिलकर खेलता था, और सबसे प्यार से बात करता था । थोड़े दिन पहले उसके घर में उसकी एक छोटी बहन आई । वह अपने बहन से भी बहुत प्यार करता था और उसका ध्यान रखता था । उसकी मम्मी जब कहती, "सोमू, बहन को बोतल से दूध पिला दो– तुम तो बड़े हो उसकी मदद कर दो"

सोमू झट से मम्मी का कहना मान लेता । पर थोड़ी ही देर बाद जब मम्मी कहती सोमू पापा का पैन मत लो अभी तुम छोटे हो तो सोमू मम्मी का कहना तो मान लेता पर मन ही मन थोड़ा परेशान होता ।

फिर एक दिन मम्मी बोली, "सोमू, तुम तो बड़े हो ना बहन को जूते पहना दो– सोमू ने झट से मम्मी का कहना मान लिया । पर थोड़े ही देर में जब मम्मी बोली, – "सोमू घड़ी मत पहनो अभी तो तुम छोटे हो" सोमू ने फिर मम्मी की बात तो मान ली पर थोड़ा सा परेशान हो गया ।

वह मन ही मन सोचता कि कभी मम्मी कहती है मैं बड़ा हूं और कभी कहती है कि छोटा हूं यह चक्कर क्या है – उसने बहुत सोचा और फिर मम्मी के पास गया

उसकी मम्मी ने जब उसकी परेशानी सुनी तो वह हॅस पड़ी और उसे बहुत प्यार से समझाया । पहले मम्मी सोमू को बहन के पास ले गई और पूछा, "तुम अपनी बहन से छोटे हो या बड़े ? सोमू झट से बोला मैं तो बड़ा हूॅ ।" फिर मम्मी उसको पापा के पास ले गई और पूछा, "तुम पापा से छोटे हो या बड़े" ? उसने कुछ सोचा और बोला, "छोटा" फिर वह मम्मी के साथ जोर से हॅसा और बोला मम्मी मुझे बात समझ आ गई मैं अपनी बहन से तो बड़ा हूॅ और पापा से छोटा ।

जामुन का पेड़

एक गांव के बाहर एक तालाब के किनारे एक बड़ा जामुन का पेड़ था । पेड़ पर बहुत से पक्षी रहते थे । चीं चीं करने वाली चिड़िया थी । नीली गर्दन वाला सुन्दर मोर रहता था । मीठा गाने वाली कोयल रहती थी । हरे पंख और लाल चोंच वाला तोता भी उसी पेड़ पर रहता था सब पक्षी मिल जुल कर रहते थे। जामुन का पेड़ भी उन्हें खूब पसन्द करता था और उन्हें मीठे काले जामुन खाने को देता था जामुन की छाया में गांव के बच्चे खेलने आते थे जामुन की पेड़ को बच्चों का हंसना खेलना अच्छा लगता था । वह अपनी टहनी हिला कर मीठे जामुन गिरा देता था और बच्चे खुशी से बीन कर जामुन खाते थे ।

एक दिन एक आदमी आया और जामुन का पेड़ काटने लगा । बेचारे पेड़ को बहुत चोट लगने लगी । सारे पक्षी और बच्चे उदास हो गये । फिर पक्षियों ने सलाह की और सभी आदमी से जामुन का पेड़ न काटने की विनती करने लगे । मोर ने कहा कि यदि वह पेड़ न काटे तो मोर अपने सुन्दर पंख देगा । चिड़िया ने कहा कि पेड़ न काटने के बदले में वह रोज फुदक–फुदक कर अपना नाच

दिखायेगी । कोयल ने कहा कि वह रोज मीठे मधुर गीत सुनायेगी । तोते ने कहा कि वह रोज मीठे काले जामुन तोड़ कर आदमी को देगा यदि आदमी पेड़ न काटे । सारे बच्चे भी आदमी से प्रार्थना करने लगे कि वह पेड़ न काटे क्योंकि बच्चे उसकी छाया में खेलते है यह सुन कर आदमी ने उन सब की बातें मान ली और कुल्हाड़ी दूर फेंक दी । उसने कहा आज से वह कोई भी पेड़ नहीं काटेगा । यह सुनकर सारे पक्षी और बच्चे खूब खुश हुए । जामुन के पेड़ ने अपनी टहनी हिला कर मीठे काले जामुन आदमी को दिये । आदमी भी खुश होकर वहां से चला गया ।

बन्दर और मगरमच्छ

एक बन्दर की मगरमच्छ से मित्रता हो गई । बन्दर नदी के किनारे जामुन के पेड़ पर रहता था । उसकी पत्नी भी साथ रहती थी । बन्दर उसको मीठे–मीठे जामुन खिलाता था । इस तरह दोनों सुख से रहते थे । एक दिन मगरमच्छ ने बन्दर से कहा – आओ आज तुम्हें मैं नदी की सैर करा लांऊ । बन्दर तैयार हो गया । मगरमच्छ ने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठा लिया । मगरमच्छ उसे लेकर नदी के बीच में पहुंचा तब उसके मन में कपट आ गया । उसने सोचा क्यों न आज बन्दर का कलेजा खाऊं । सुना है बन्दर का कलेजा बड़ा मीठा होता है उसने बन्दर से कहा मित्र आज तो मैं तुम्हारा कलेजा खाऊँगा । बन्दर यह सुनकर घबरा गया, परन्तु वह बहुत चालाक था । तुरन्त बोला– मित्र तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया । कलेजा तो मैं जल्दी जल्दी में अपनी स्त्री के पास छोड़ आया हूं । अब किनारे पर वापस चलो । मैं अपना कलेजा लेकर तुम्हें दे दूंगा। तुम उसे खा लेना । यह सुन कर मगरमच्छ तुरन्त वापस चल पड़ा । जब वह नदी के किनारे पहुंचा तो बन्दर कूदकर वृक्ष पर जा चढ़ा । बन्दर बोला –मगरमच्छ जी ! अब आप घर

जाइए । आज तो मेरी जान बच गई । तुम जैसे धोखेबाज के साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए । यह सुनकर मगरमच्छ बड़ा लजाया । वह वापस नदी की ओर चल दिया ।

सीखने योग्य बात– मित्रता सोच समझकर करनी चाहिए ।

जंगल का राजा कौन

एक जंगल में एक बूढ़ा शेर रहता था। बूढ़ा होने के कारण अब उसमें बहुत शक्ति नहीं रही थी। इस कारणवश वह जंगल की देखभाल भी ठीक से नहीं कर पाता था । उसी जंगल में एक भालू भी रहता था । भालू और शेर में काफी अच्छी दोस्ती थी । एक दिन एक दूसरा शेर दूर गांव से खाने की तलाश में भटकता हुआ उस जंगल में आ पहुंचा । भालू ने जब दूसरे शेर को दूर से जंगल की ओर आते देखा तो वह भागा भागा बूढ़े शेर को खबर देने पहुंचा । बूढ़े शेर ने जैसे ही यह खबर सुनी तो वह गुस्से से लाल पीला हो गया । वह दहाड़ता हुआ उस शेर की तरफ लपका और जोर से दहाड़ कर बोला– मैं इस जंगल का राजा हूं, तुम यहां नहीं रह सकते हो । देखते ही देखते दोनों शेरों में घमासान लड़ाई शरू हो गई और सारे जंगल में उनकी आवाजें गूंजने लगी । लड़ाई देखकर भालू बहुत घबराया । उसने जल्दी–जल्दी जंगल के सभी जानवरो को इकट्ठा किया और दोनों शेरों का झगड़ा रूकवाया । जानवरों की सभा बैठी, उन्होंने सोचा कि जंगल में तो एक ही शेर राजा बनकर रह सकता है तो कैसे इसका फैसला किया जाये । भालू को एक बात सूझी और बोला, क्यों न दोनों शेरों का एक मुकाबला हो जाए जो शेर ऊंचा दहाड़ेगा वही जंगल का राजा कहलायेगा । पहले बूढ़ा शेर दहाड़ा । जंगल के कुछ हिस्सों में आवाज गूंजी । अब दूसरे शेर ने दहाड़ा तो पूरा जंगल कांपने लगा । जानवरों के इघर–उधर भागने की आवाजे सुनाई दी । यह देखकर सभी जानवरो ने दूसरे शेर को राजा मान लिया बूढ़े शेर ने भी उससे

हाथ मिलाया और उससे कहा कि अब से जंगल की रखवाली करना तुम्हारी ही जिम्मेदारी है इसके बाद जंगल के सब जानवर खुशी–खुशी रहने लगे ।

भयभीत हुए बनबन और पिग्सी

बन बन एक छोटा सा सफेद खरगोश था । उसका नाक लाल और लम्बे लम्बे दो कान थे । पिग्सी बन बन का दोस्त था । पिग्सी का नाक गुलाबी और गोल तथा छोटे–छोटे दो कान थें । बन बन और पिग्सी को अपने घर के पास के बगीचे में खेलना बड़ा अच्छा लगता था । एक दिन बन बन ने पिग्सी से कहा – पिग्सी मैंने कभी जंगल नहीं देखा, चलो जंगल देखने चलते है । बन बन और पिग्सी जंगल की तरफ चल पड़े । पिग्सी ने कहा – देखो, देखो कितने पेड़ है, बड़े पेड़, छोटे पेड़, लम्बे पेड़, ठिगने पेड़ ।

टप टप टप टप बन बन ने हैरानी से पूछा–यह क्या है ? पिग्सी ने कहा – "वह घोड़ा है ।"

पिग्सी ने कहा – "देखो वहां एक हाथी है ।" बन्न बन्न ने कहा–देखो उसका नाक लम्बा है और उसके कान मेरे दोनो कान मिलाकर भी उनसे लम्बे है गिलहरी को पेड़ पर चढ़ते देख पिग्सी हंसा और कहने लगा – उस गिलहरी ने तो मुझे डरा ही दिया था ।

पिग्सी और बन बन ने जंगल में बहुत से जानवर देखें । उन्होनें लम्बी गर्दन वाला जीराफ, पीठ पर कूबड़ वाला ऊंट, बड़ा मोटा गैंडा, पेड़ पर झूलता हुआ लम्बी पूंछ वाला बन्दर देखा ।

अब बन बन और पिग्सी घने जंगल में पहुंच चुके थे । वहां जोर की दहाड़ सुनकर पिग्सी और बन बन डर गए । पिग्सी फुसफुसाया – "यह तो चीते की आवाज लगती है ।"

बन बन ने कहा "आओ भाग कर छिप जाएं ।" यह कह कर वह फुदकता हुआ पेड़ के पीछे छिप गया ।

चीता नजदीक आ रहा रहा था । बन बन और पिग्सी डर से कापंने लगे । उन्होंने इधर उधर देखा और उन्हें एक खोखला पेड़ दिखाई पड़ा । वे झटपट खोखल में छिप गए ।

चीता दहाड़ता और दौड़ता हुआ आया । उसने भांप लिया कि बन बन और पिग्सी वहां है वह उन्हें खाना चाहता था । उसने यहां वहां देखा पर वे उसे नहीं मिले । वह खोखले पेड़ के पास बैठ गया । दूर से उन्हें बारिश की टप टप सुनाई दी । देखते ही बारिष तेज हो गई । चीता अपनी गुफा की तरफ दौड़ा । बन बन और पिग्सी ने खोखल में से झांका । चीता चला गया था । वे झट से निकले और घर की तरफ दौड़ पड़े ।

बकरी और बूढ़े बाबा

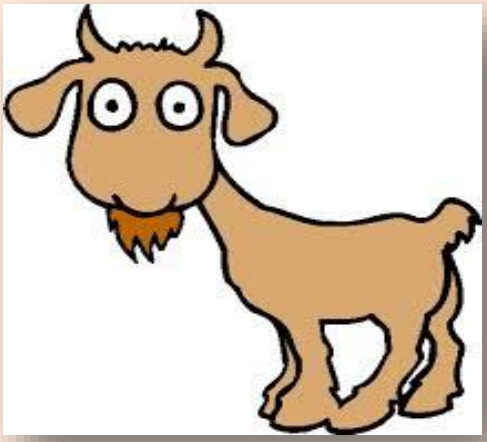

एक गांव में एक बकरी थी । उसका नाम चमेली था । उसे हरी–हरी घास खाना बहुत अच्छा लगता था । एक दिन हरी–हरी घास की तलाष में चमेली अपने गांव से दूर निकल गई । घास खाते–खाते जब शाम होने लगी तो उसे अपने गांव की याद आई । वह गांव की तरफ तेज़ी से चलने लगी । रास्ते में एक जंगल पड़ता था, जिसमें बहुत से जानवर रहते थे ।

चमेली को वहां से गुजरते हुए डर लग रहा था । इतने में उसने सामने से एक भेड़िये को आते हुए देखा । वह भेड़िये को देखकर बहुत घबराई, डर के मारे कांपने लगी और इधर–उधर भागने लगी । कभी पेड़ की ओट में छिप जाती और कभी झाड़ के पीछे । इसी बीच उसे बूढ़े बाबा लाठी लिये दिखाई दिये ।

वह जोर से रोने लगी मैं.....मैं.....मैं..... बकरी की आवाज सुनकर बूढ़े बाबा ने इधर–उधर देखा तो उन्हें भेड़िया दिखाई दिया । बूढ़े बाबा ने अपनी लाठी उठाई और भेड़िये की अच्छी पिटाई की । भेड़िया वहां से भाग खड़ा हुआ । जान बच जाने पर चमेली ने बाबा को धन्यवाद दिया और खुशी–खुशी अपने गांव लौट आइ। फिर एक दिन चमेली गांव के मैदान में घास चर रही थी तो उसने बूढ़े बाबा को एक पेड़ मे नीचे सोते देखा । इसी पेड़ से एक मोटा सा सांप बूढ़े बाबा की ओर आ रहा था । चमेली ज़ोर से चिल्लाने लगी मैं.....मैं.....मैं..... और भाग कर नेवले को बुला लाई । नेवला सांप पर झपटा । खूब लड़ाई हुई । और उसने सांप को मार गिराया यह शेर सुन बाबा की आंख खुल गई । उन्होंने देखा कि चमेली ने उनकी जहरीले सांप से जान बचाई । यह देखकर वह बहुत खुश हुए और उन्होंने चमेली को बहुत प्यार किया । उस दिन से वह तीनों अच्छे दोस्त बन गये और साथ–साथ रहने लगे ।

शेर और चूहा

किसी जंगल में एक शेर रहता था । उसी वन में एक चूहा भी रहता था । शेर एक गुफा में रहता था। शेर अपने भोजन के लिए रात को शिकार किया करता था । दिन के समय वह सोता रहता था । एक दिन शेर गुफा में सो रहा था । उसी समय वह चूहा गुफा में घुस गया । घूमते–घूमते अनजाने में ही वह शेर की पीठ पर चढ़ गया । इससे शेर जाग गया । उसने चूहे को देखा और बहुत नाराज़ हुआ। उसने चूहे को अपने पंजे के नीचे दबा लिया । चूहा चीं–चीं करने लगा । चूहा बोला, " शेर राजा मुझे छोड़ दो । मैं कभी आपके काम आऊंगा । दया करके मुझे छोड़ दीजिए । चूहे की बात सुनकर शेर ज़ोर से हंसा । उसने जवाब देते हुए कहा, "तुम मेरे किस काम आ सकोगे ? तुम एक छोटे से चूहे हो । मैं जंगल का राजा हूं । तुम पर दया करके आज छोड़ देता हूं फिर कभी ऐसा काम न करना । कभी मुझे तंग न करना । नहीं तो तुमको जीवित नहीं रहने दूंगा ।" ऐसा कहकर शेर ने चूहे को छोड़ दिया । चूहा वहां से भाग गया ।

एक दिन जंगल में एक शिकारी आया । वह शेर को पकड़ना चाहता था ।इसलिए उसने अपना जाल गुफा के पास ही फेला दिया । शेर उस जाल में फंस गया । शेर बहुत दुःखी हुआ । वह जोर–जोर से दहाड़ने लगा ।

चूहा गुफा के पास ही कहीं घूम रहा था । उसने शेर की दहाड़ को सुना, तो वह भाग कर वहां पहुंच गया । उसने झटपट अपने तेज दांतों से उस जाल को काट डाला । शिकारी के आने से पहले ही शेर जाल से छूट गया । शेर को एक छोटे से चूहे ने बचा लिया ।

उछलू बन्दर और धीरू कछुआ

उछलू बन्दर और धीरू कछुआ दोनों अच्छे मित्र थे । उन्हें जंगल में नदी के किनारे खेलना पसंद था ।

एक दिन जब वे नदी की तरफ जा रहे थे, धीरू ने देखा कि उछलू बहुत धीरे धीरे चल रहा है । उसने कहा 'उछलू, आज तुम मेरी तरह चल रहे हो । उछलू रोने लगा – 'मैं बहुत बीमार हूं, मेरा पेट भी बहुत दुख रहा है । आज मैं पेड़ों पर उछल कूद नहीं कर सकता ।'

धीरू ने कहा, 'रोओ मत उछलू, मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें नदी तक ले चलूंगा और धीरू उछलू को उठाकर नदी तक ल गया । नदी के उस पार आम, केले और संतरे के बड़े–बड़े पेड़ थे । धीरू ने सोचा कि अगर उछलू ये फल खाए तो वह ठीक हो जाएगा । इसलिए उसने उछलू से कहा कि वह उसे कस कर पकड़ ले । फिर दोनो ने नदी पार कर ली । धीरू ने फलों तक पहुंचने की बहुत कोषिष की पर वे बहुत ऊंचे लगे थे ।

धीरू ने देखा कि तोता राम तोता एक पेड़ पर बैठा था । उसने उससे कुछ फल नीचे फेंकने का अनुरोध किया । परन्तु तोता राम ने कहा 'वह पेड़ मेरा है ओर इसके सारे फल मेरे हैं । जब

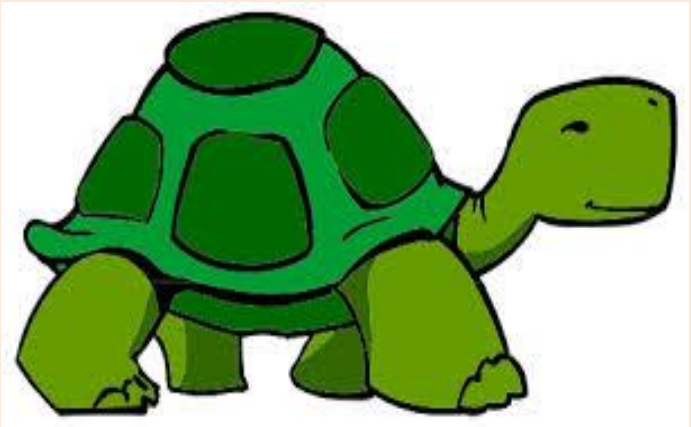

धीरू ने बीमार उछलू की ओर इषारा करते हुए उससे बहुत मिन्नत की तो तोताराम मान गया । मैं कुछ फल नीचे फेंक दूंगा परन्तु फेंकने से पहले मैं उन्हें चख कर देखूंगा ।'

तोता राम बहुत खराब पक्षी था । चखते समय वह मीठे फल खुद खा जाता था और खट्टे फल नीचे डाल देता था । जब उछलू ने देखा कि उसे सिर्फ खट्टे फल मिल रहे हैं तो उसे बहुत गुस्सा आया । वह अपनी बीमारी भूल गया और तोता राम पर झपटा, किन्तु तोताराम उड़ गया । जब उछलू ने खुद बहुत सारे फल तोड़े और उन्हें अपने मित्र धीरू के पास नीचे फेंका । तब दोनों मित्रों ने मिल कर खूब फल खाए वे खाते रहे..... खाते रहे..... खाते रहे ।

नीली पीली और लाल मछली

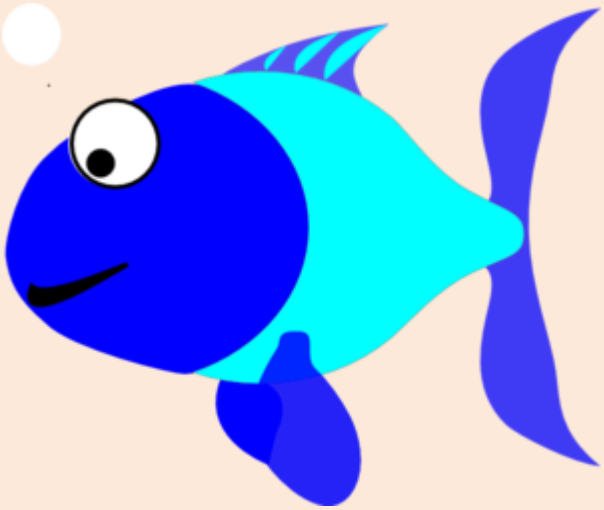

बहुत समय पहले एक तालाब में तीन मछलियां रहती थी । इन तीनों में से एक का रंग लाल, दूसरी का पीला, और तीसरी का रंग नीला था । नीली मछली काफी समझदार और चालाक थी । जब कि लाल मछली चुपचाप रहने वाली थी और पीली मछली बेसकूफ व ज्यादा बोलने वाली थी ।

एक दिन एक मछुआरा मछली पकड़ने के लिए उस तालाब पर आया मछुआरे को अपनी ओर आता देखकर नीली मछली ने बाकी दोनों मछलियों को उसके साथ दूसरे तालाब में आने के लिए कहा । पर उन दोनों ने उसकी एक न मानी । तब नीली मछली अकेले ही दूसरे तालाब में चली गई ।

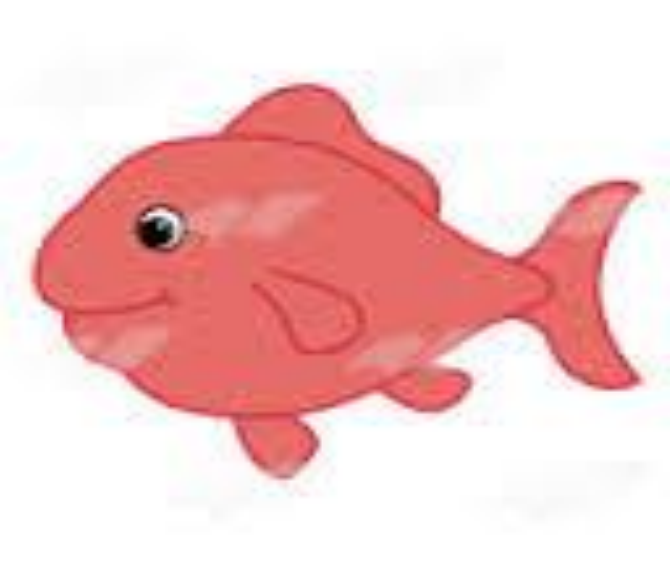

अब तक मछुआरा तालाब पर पहुंच चुका था । उसने मछलियां पकड़ने के लिए जैसे ही उपना जाल फेका वैसे ही पीली व लाल मछली उसमें फंस गई । अब तो वे दोनों बहुत पछताई और नीली मछली की बात याद कर बहुत दुःखी हुई ।

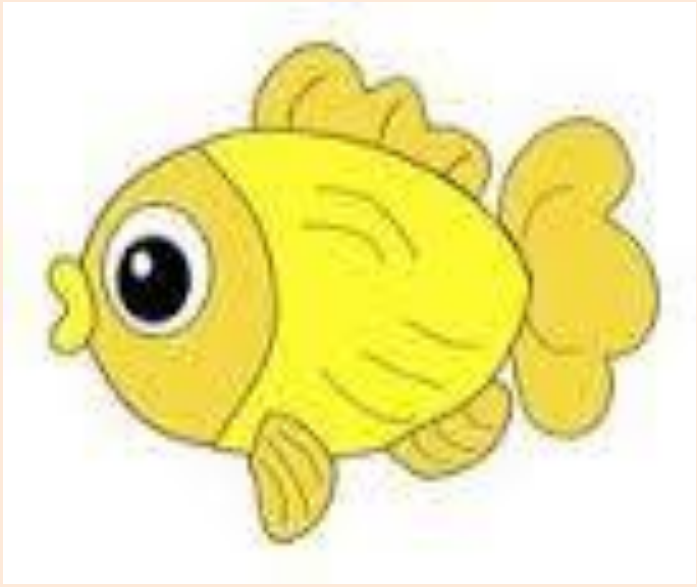

तभी लाल मछली को एक तरकीब सूझी और दम साधकर बिल्कुल चुपचाप पड़ी रही मछुआरे ने लाल मछली को मरा हुआ समझकर वापस तालाब में फैक दिया। जबकि पीली मछली उछलती–कूदती और शोर मचाती रही । मछुआरा उसे पकड़ कर अपने साथ उसे बेचने के लिए बाहर ले गया ।

गुड़िया और तीन भालू

गुड़िया स्कूल से घर पर पहूँची, और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी, मम्मी मुझे घुमने जाना है, मम्मी ने कहा, छुट्टियों में घूमने जाएगें,गुड़िया जिद्द करने लगी, नहीं नहीं अभी जाऊँगी। मम्मी ने कहा अच्छा ठीक है कच्चे रास्ते से नहीं जाना, सड़क के रास्ते से जाना है, गुड़िया खुश हो गयी और मम्मी का कहा भूल गई। गुड़िया गाना गाती चल रही थी। ला ला ला ला– और कच्चे रास्ते पर चली गयी, चलते–चलते एक बड़े जंगल में पहुँच गयी, पीछे मुड़कर देखा कोई रास्ता नहीं, गुड़िया रोने लगी, रोते–रोते जंगल में आगे बढ़ती गई क्योंकि जंगल में कोई रास्ता नहीं होता घबराने लगी । उसे सामने एक घर दिखाई दिया। गुड़िया घर में गयी, दरवाज़ा बन्द था, उसने पीछे देखा खिड़की खुली थी, खिड़की से अन्दर चली गयी। वहॉ तीन भालू रहते थे। पापा भालू , मम्मी भालू और छोटा बेबी भालू । बेबी भालू का जन्म दिन था। उसकी मम्मी भालू ने खीर बना रखी थी। बेबी भालू को खीर पसंद थी, बेबी भालू जल्दी से हाथ धोकर खीर खाने लगा, मम्मी यह तो गर्म–गर्म है, मम्मी ने कहा इसे तो ठड़ी करके खाते है। चलो बाज़ार चले तब तक ठड़ी हो जाएगी। मम्मी ने बड़ा कटोरा पापा के लिए, छोटा कटोरा मम्मी के लिए और सबसे छोटा कटोरा बेबी भालू के लिए खीर डाल कर ठंडी करने के लिए मेज़ पर रख दी और घुमने बाज़ार चले गये।

गुड़िया अन्दर आयी रोते–रोते भूख लगी थीं उसने हाथ धोए और देखा मेज पर तीन कटोरे रखे हैं, बड़ा, छोटा व सबसे छोटा। उसने बड़े कटौरे से खीर खायी तो कहने लगी इतना बड़ा कटोरा मैं इस खीर को नहीं खा सकती, उसने दूसरे कटौर से खीर खायी और चखा इसे भी मैं नहीं खा सकती, यह बहुत सारी खीर है फिर उसने सबसे छोटे कटोरे से खीर खायीं और कहा हॉ इसे मैं खा सकती हूँ गुड़िया ने सारी खीर बच्चों खाली। अब उसे नींद आने लगी। उसने दूसरे कमरे में देखा तीन पलंग थे, बड़ा, छोटा और सबसे छोटा। बड़े पलंग में गयीं – यह मेरे लिए नहीं है। उससे छोटे पलंग पर गयी और कहा – यह भी मेरे लिए नहीं है, फिर सबसे छोटे पलंग पर सोई हॉ यह मेरे लिए है। गुड़िया को नींद आ गई। उधर से बेबी भालू मम्मी पापा के साथ घूमकर घर वापिस आ गये।

खीर की भूख लगी थी बेबी भालू ने जल्दी से हाथ धोए और खाने की मेज़ पर गया, देखा तो रोने लगा मम्मी–मम्मी मेरी खीर किसी ने खा ली है, और पापा की खीर भी खाई है, मम्मी आप की खीर भी चख रखी है। मम्मी भालू ने कहा कोई बात नहीं दूसरी खीर ले लो। भालू ने खीर खा लीं। अब उसे नींद आ रही थी। मम्मी को कहा मम्मी मैं सोने जा रहा हूँ। जैसे ही दूसरे कमरे में गया देखा – और डर गया, और मम्मी, पापा को आवाज़ लगाने लगा। मम्मी जल्दी आओ–2

देखो मेरे पलंग पर कोई सो रहा है। मम्मी–पापा जल्दी से आए और देखा गुड़िया सो रही है, उसे प्यार किया, गुड़िया जाग गई और रोने लगी। मुझे मम्मी के पास जाना है। बच्चों सुबह हुई तो तीनों भालू मम्मी, पापा और बेबी भालू ने गुड़िया को जंगल के रास्ते से घर का रास्ता दिखाया। गुड़िया सड़क पर आ गई और जल्दी –जल्दी घर पहुॅच गई। मम्मी के गले से मिलकर रोने लगी। और कहा – मम्मी अब मैं अकेले कभी भी घूमने नहीं जाऊॅगी। मम्मी– पापा के साथ ही जाऊॅगी और कभी ज़िद नहीं करूगीं ! बजाओ बच्चों ताली !

गिलहरी का कुल्लड़

एक पेड़ पर एक गिलहरी रहती थी। उसी पेड़ के नीचे एक बछड़ा भी रहता था । दोनों में पक्की दोस्ती थी। दोनों साथ–साथ घूमते, साथ–साथ खेलते।

एक दिन गिलहरी बछड़े के पास गई और बोली चलो दोस्त खेलने अभी चाय पी रहा हूँ, आओ तुम भी चाय पी लो फिर खेलने चलेंगे । हा, लेकिन चाय पीने के लिए अपना कुल्लड़ लेती आओ। गिलहरी सोच में पड़ गई, वह सोचने लगी कि कुल्लड़ कहॉ से लाए। एसे एक उपाए सूझा उसने पेड़ की डाल पर बने कोटर में अनाज़ के कुछ दाने इक्ठ्ठे कर रखे थे उन दानों को उसने एक कपड़े में बांधा और कुल्लड़ लेने चल दीं।

कुछ दूर जाने पर गिलहरी ने देखा कि तालाब के किनारे एक आदमी कपड़े धो रहा था। गिलहरी उसके पास गई और बोली भाई–भाई दाना ले लो, मुझको एक कुल्लड़ दे दो। आदमी बोला – गिलहरी सुनो मैं धोबी हूँ मेरा काम है कपड़े धोना मेरे पास कुल्लड़ कहॉ, गिलहरी फिर चल दी। कुछ बढ़ने लगी उसे एक आदमी दिखाई दिया वह लकड़ी के सामान बना रहा था । गिलहरी उसके पास बैठ गई और बोली भाई–भाई दाना ले लो, मुझको एक कुल्लड़ दे दो। वह बोला देखो मैं लकड़ी की चीजें बनाता हूँ । मैं बढ़ई हूँ मेरे पास कुल्लड़ कहॉ, गिलहरी फिर बढ़ी

उसने एक आदमी खेत में हल चला रहा था। वह उसके पास पहुॅची और बोली भाई–भाई दाना ले लो, मुझको एक कुल्लड़ दे दो।

इस प्रकार बच्चों वह लौहार के पास गयी उसने भी मना कर दिया। गिलहरी उदास हो गई कहने लगी धोबी के पास कुल्लड़ नहीं, बढ़ी के पास कुल्लड़ नहीं किसान और लौहार के पास भी कुल्लड़ नहीं किसी के पास कुल्लड़ नहीं। मुझे कुल्लड़ नहीं मिलेगा तो मैं चाय दूध कैसे पीऊंगी

लौहार ने यह सुन लिया उसे गिलहरी पर दया आ गयी उसने गिलहरी को कहा नन्हीं गिलहरी कुल्लड़ तुम्हें कालू कुम्हार के पास मिलेगा वही जाओ। गिलहरी उछलती कूदती कुम्हार के पास गयी और बोली कुम्हार–कुम्हार दाना लो, मुझको एक कुल्लड़ दो । कुम्हार मिट्टी सान रहा था वह बोला –चाक मैं घुमाऊॅगा, कुल्लड़ मैं बनाऊॅगा,धुपमें सुखाऊॅगा, आग में पकाऊॅगा, कुल्लड़ मैं तब दूंगा ।

कुम्हार की छोटी बेटी इन दोंनो की बातें सुन रही थी वह दौड़ कर घर के अन्दर गयी और एक कुल्लड़ लेकर आयी वह अपने पिताजी से बोली – यह मेरा खेलने वाला कुल्लड़ गिलहरी को दे दो। कुम्हार ने कुल्हड़ गिलहरी को दे दिया गिलहरी ने कुम्हार को दाना देने लगी पर कुम्हार ने दाना नहीं लिया उसने कहा जाओ बहन इसे तुम खा लेना । कुल्लड़ लेकर गिलहरी खुषी–खुषी चाय दुध पीने चली गयी । बजाओ ताली !

दो तोते

एक जामुन के पेड़ पर दो तोते रहते थे । एक दिन वह आम खाने निकले । उनको बहुत दूर एक आम का पेड़ दिखा । उस पर बहुत सारे आम लगे थे । वे उस पेड़ पर आकर आम खाने लगे । लेकिन उस पेड़ पर एक बंदर रहता था । जिसने तोतों को भगा दिया । तोतों ने बंदर को जामुन लाकर दिये । बंदर खुश हो गया । उनमें दोस्ती हो गई । सबने मिलकर बहुत सारे आम और जामुन खाये ।

मैं भी

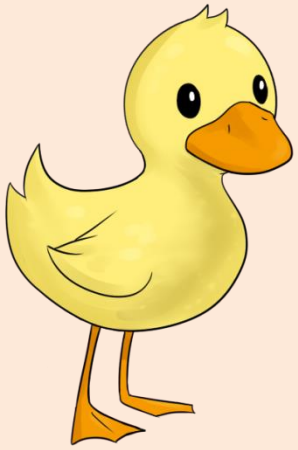

एक अंडे में से बत्तख का बच्चा निकला "लो मैं अंडे में से निकल आया" – बत्तख का बच्चा बोला।

एक और अंडे में से मुर्गी का चूज़ा निकला

"मैं भी आ गया", चूज़ा बोला

"मैं घूमने जा रहा हूं" बत्तख का बच्चा बोला"

"मैं भी चलूंगा," चूज़ा बोला ।

"मैं गड्ढा खोद रहा हूं" बत्तख का बच्चा बोला

"मैं भी खोदूँगा", चूज़ा बोला

"मुझे एक केंचुआ मिला", बत्तख का बच्चा बोला

मुझे भी चूज़ा बोला ।

मैंने एक तितली पकड़ी, बत्तख का बच्चा बोला।

मैंने भी तितली पकड़ी, चूज़ा बोला ।

"मैं तैरना चाहता हूं, बत्तख का बच्चा बोला

"मैं भी" चूज़ा बोला ।

"देखो मैं तैर रहा हूं" बत्तख का बच्चा बोला

"मैं भी तैरूंगा", चूज़ा बोला ।

"बचाओ.....", चूज़ा डूबते हुए चिल्लाया

बत्तख के बच्चे ने चूज़े को पानी से बाहर निकाला

मैं वापस पानी में जा रहा हूं, बत्तख का बच्चा बोला

"अब मैं नहीं", चूज़ा बोला"

मैना और कौआ

एक कौआ था और एक मैना थी । दोनों पेड़ पर रहते थे । दोनों अच्छे दोस्त थे । एक दिन मैना ने कहा चलो चावल की खेती करें । मैना बोली हम दोनों चावल ले आते है कौआ बोला मैं खेत जोतता हूँ तू चावल ले आ । मैना उड़ती गई और चावल का दाना ले आई । कौआ वहीं बैठा रहा । मैना ने कहा कि क्या हुआ तुमने खेत क्यों नहीं जोता । कौए ने कहा कि मेरी तो चोंच टूट गई । इसलिए खेत नहीं जोता । मैना बेचारी ने अकेले ही खेत जोत लिया । अगले दिन फिर मैना ने कौए से कहा चलो – चलो खेतों में चावल बो आएं । कौआ बोला मैना रानी मेरी तो चोंच टूटी हुई है ।

लुहार के पास जाऊंगा

टूटी चोंच जुड़वाऊंगा

फिर खेत में जाऊंगा

मैना बेचारी अकेले ही चावल ले आई । अगले दिन फिर मैना ने कहा कौए–कौए चलो आज पानी दे आते है । कौआ आलसी था फिर बोला

मैना रानी मेरी तो चोंच टूटी हुई है ।

लुहार के पास जाऊंगा

टूटी चोंच जुड़वाऊंगा

फिर खेत में जाऊंगा

कुछ दिनों में चावल की फसल तैयार हो गई तो मैना ने कहा कौए–कौए चले चावल चुन ले । कौआ बोला –

मैना रानी मेरी तो चोंच टूटी हुई है ।

लुहार के पास जाऊंगा

टूटी चोंच जुड़वाऊंगा

फिर खेत में जॉऊंगा

मैना ने अकेले ही चावल चुन लिए और चावल और भूसे का अलग–2 ढेर लगा दिया । अगले दिन फिर कौए से मैना ने बोला – कौए–2 आओ चलो बंटवारा कर लेते है । कौए ने कहा हां हां चिड़िया रानी चलो–चलो जल्दी चलो । खेतो में पहुंचते ही बारिश का मौसम हो गया कौए ने बिना सोचे समझे कहा कि मैं तो बड़ा वाला ढेर लूंगा । तुम छोटा ले लो । मैना ने कहा ठीक है बड़ा वाला कौए ने ले लिया और छोटा ढेर मैना ने ले लिया । बारिश आई और ओले पड़े । बड़ा ढेर भूसे का तथा छोटा ढेर चावल का था । रानी चावल के ढेर में छुप गई और कौए के ऊपर इतने ओले पड़े कि वह वहीं मर गया । मैना ने मेहनत की इसलिए उसे चावल मिल गए ।

चीं चीं चिड़िया

एक जंगल में बहुत से पेड़ थे, वहॉ एक पेड़ पर घौंसला बना कर चिड़िया रहती थी। उस चिड़िया का एक बच्चा था। चिड़िया ने उसका नाम चीं चीं रखा था। वही चीं चीं को बहुत प्यार करती थी वह उसके लिए दाना लाती थी।

चिड़िया दाना लाकर बच्चे को खिलाती थी, कुछ दिनों में ही चीं ची के पंख निकल आये। वह थोड़ा उड़ने लगा। चिड़िया ने कहा – बेटा मैं दाना लेने जा रही हूॅ, मेरे जाने के बाद तुम घोंसले से बाहर मत जाना, चिड़िया चली गई, चीं चीं गाने लगा इतने में एक बिल्ली आई, घोंसले में चीं चीं को देखकर वह खुष हुई । उसने सोचा मैं इसे खाऊॅगी, बिल्ली पेड़ पर चढ़ने लगी, पेड़ सीधा था। बिल्ली नीचे गिर गई। बिल्ली ने कई बार कोशिष की पर वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकी, वह म्याऊॅ म्याऊॅ करने लगी। चिड़िया के बच्चे ने घोंसले से सिर बाहर निकाल कर देखा। बिल्ली प्यार से कहने लगी – प्यारे चीं चीं मैं हूॅ तुम्हारी मौसी। आओ मेरी गोद में आ जाओ। चीं चीं ने कहा ना मौसी मैं नीचे नहीं आऊॅगा। मेरी मॉ मना कर गई है। वह कहती थी बेटा घोंसले से बाहर मत जाना।

हार कर बिल्ली वहॉ वे चली गई। चीं चीं फिर गाना गाने लगा। कुछ देर में चिड़िया आ गई । चीं चीं ने उसे बिल्ली की सारी बात सुनाई। चिड़िया ने बेटे को बहुत प्यार किया, कहने लगी तुम अच्छे बच्चे हो, अच्छे बच्चे मॉ का कहना मानते है।

मच्छर

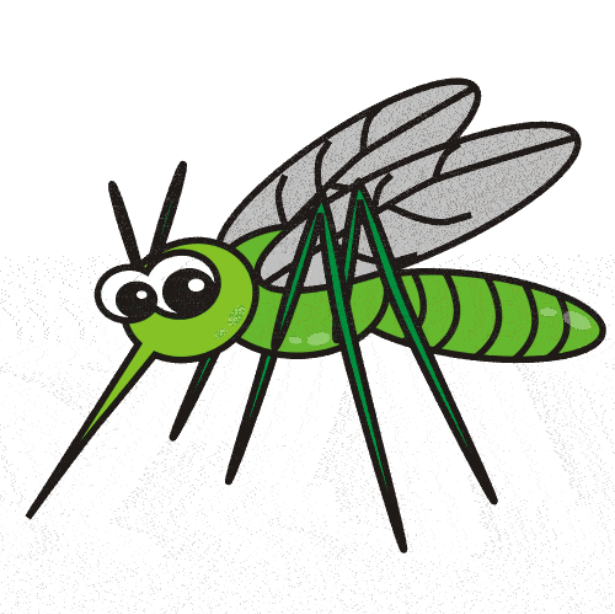

एक मच्छर था। वह गाये तो भन भन, बोले तो भन भन और रोये तो भी भन भन। मच्छर था बड़ा भुल्क्कड । एक बार मच्छर अपना ही नाम भूल गया। अ बवह बहुत परेशान , क्या करूं, क्या करूं कैसे उसे अपना नाम याद आए। इतने में उसे कोयल की आवाज़ सुनाई पड़ी वह उड़कर उसके पास पहुंच गया और बोला

कुहू कुहू भई कुहू कुहू
मेरा नाम बता दे तू
कोयल बोली;
कैसा है रे तू फक्कड़
बुद्धू और भुलक्कड़
करने दे तू मुझको काम
मैं क्या जानू तेरा नाम ?

परेशान मच्छर आगे बढ़ा उसे एक मुर्गा बोला

कुकडू कूँ भई कुकडू कूँ
मेरा नाम बता दे तू
मुर्गे ने कहा
कैसा है रे तु बुद्धू और भुलक्कड़

करने दे तू मुझको काम

मैं क्या जानू तेरा नाम

मच्छर सोचने लगा कि अब क्या करें । इतने में उसे दिखायी पड़ा कबूतर वह उसके पास पहुॅचा और बोला

गुटरू गूॅ भई गुटरू गूॅ

मेरा नाम बता दे तू

कबूतर ने कहा

कैसा है रे तु बुद्धू और भुलक्कड़

करने दे तू मुझको काम

मैं क्या जानू तेरा नाम

मच्छर घूम–घूम कर थक गया। इतने में उसने देखा कि एक व्यापारी गाना भी गा रहा था सामान लाद कर गॉव की ओर जा रहा था व्यापारी ने गाना गाया

चल चल चल, चल चल चल

जल्दी चल, भई जल्दी चल

पहुॅचा दे जल्दी से घर

ओ खच्चर, ओ खच्चर

बस क्या था, खच्चर सुनते ही मच्छर को याद आ गया कि उसका नाम मच्छर है वह खुश होकर गाने लगा?

मजा आ गया, मजा आ गया

याद आ गया, याद आ गया

खच्छर, खच्छर, ओ खच्छर

मैं हूॅ मच्छर, मैं हूॅ मच्छर।

फूल और शरारती बच्चे

`

एक गांव में एक सुन्दर सा बगीचा था । उस बगीचे में सुन्दर–सुन्दर फूल खिलते थे । बगीचे की देखभाल एक माली किया करता था उसी बगीचे के पास एक शरारती बच्चा रहता था हर रोज़ जब माली सो जाता था बच्चा चुपके से बगीचे में घुस जाता था और सारे फूल तोड़ कर इधर–उधर फैंक देता । माली चिंतित हो जाता था कि सारे फूल कौन ले जाता है; उधर सारे फूल भी परेशाान रहते कि हम बरबाद होने के लिए थोड़े ही बने है । हम तो बहुत सुन्दर हैं, घर और बगीचे की खूबसूरती बढ़ाते हैं, सभी को रंग बिरंगी खुशबू देते हैं हम भगवान के चरणों में चढ़ाये जाते हैं वीरो के पथ पर बिछाए जाते हैं और कभी श्रेष्ठ पुरूषो के गले की माला बनते हैं । परन्तु ये बच्चा नटखट है हम को काफी परेशाान करता है । सारे फूलों ने अपनी परेशाानी को अपने राजा फूल गुलाब को बताया । राजा

गुलाब ने एक उपाय सूझा । उसने सारे फूलों से कहा – जब शरारती बच्चा बगीचे में आएगा तुम सारे फूल छिप जाना और मैं खिला रहूंगा । सभी ने ऐसा ही किया, जब शरारती बच्चा बगीचे में घुस आया तब सारे फूल छिप गए । शरारती बच्चे ने सोचा क्या बात है । भाई आज सारे फूल दिखाई नहीं दे रहे ? उधर उसे गुलाब का फूल दिखाई दिया बच्चे ने सोचा अभी माली भी सोया हुआ है । चलो चुपके से गुलाब का फूल ही तोड़ लूं । चुपके से **श**रारती बालक ने गुलाब को तोड़ना चाहा गुलाब ने झट से अपना कांटा उस बच्चे को चुभो दिया । बच्चे की उॅगली से खून बहने लगा तथा दर्द से बच्चा चिलाया तो माली की नींद खुल गई । माली ने बच्चे को बंगीचे में देखा और बच्चे को पकड़ लिया । बहुत डांटा उसे समझाया भी । बच्चे को अपनी गलती का अहसास हुआ । उसने कहा कि वह अब से कभी भी फूलों को नहीं तोडूंगा । सारे फूल बच्चे की बात सुनकर खुश हो गए कि अब उन्हें कोई भी परेशाान नहीं करेगा । यह सोच–सोच कर सारे फूल खुशाी से गाने, नाचने और झूमने लगे ।

माली और बन्दरों की टोली

एक माली था उसका छोटा से एक बगीचा था । उस बगीचे में छोटे–बड़े बहुत सारे पौधे थे । उन पौधों पर फूल और फल लगते थे। माली रोज़ उनकी देखभाल करता था । रोज़ उन्हें पानी व खाद देता था । एक दिन माली को बाहर से बीज लेने जाना था । माली परेशान हो गया और सोचने लगा मेरे जाने के बाद पौधे की देखभाल कौन करेगा। उस बगीचे के पास एक बन्दर की टोली रहती थी। वह माली के दोस्त थे और रोज माली के पास आया करते थे ।

बन्दरों ने माली को परेशान देखा और कारण पूछा तो माली ने कहा कि मुझे बाहर जाना है पर इन नन्हें पौधो की देखभाल कौन करेगा । तब बन्दरों ने कहा कि माली भैया आप क्यों चिन्ता करते हो हम आपका बगीचा संभाल लेंगे। रोज़ हम इसमें पानी दिया करेगें । माली बाहर चला गया अगले दिन बन्दर की टोली आयी और पूरे बाग को पानी से भर दिया। क्योंकि उन्होंने माली से पूछा नहीं था कि कितना पानी देना है ज्यादा पानी देने से सारे पौधे खराब हो गये । बगीचे को खराब देखकर बन्दर परेशान हो गये और शैतानी करने लगे । दूसरे दिन

माली जब बाहर से आया तो अपने बगीचे के पौधों को खराब देखकर बहुत दुःखी हुआ और कहा कि अब अपने बगीचे की देखभाल खुद करूगां । फिर उसने अपने बगीचे की देखभाल की और पहले जैसा हरा भरा कर दिया ।

पुलिसवाला

एक दिन छोटू खो गया और घर जाने का रास्ता भूल गया । वह रोने लगा। एक पुलिसवाला उसके पास आया और पूछा, "बेटा, तुम क्यों रो रहे हो ?" छोटू बोला "मुझे घर जाना है ।" तुम्हारा घर कहां है ?" "मुझे मालूम नहीं ।" तुम्हारा नाम क्या है? "छोटू" । तुम्हारे पिता का नाम क्या है ? "रामसिंह" । तुम्हारे स्कूल का क्या नाम है ? "Child Care Centre" पुलिसवाले ने कहा मैं तुम्हें तुम्हारे स्कूल ले चलता हूं । छोटू रोता हुआ पुलिसवाले का हाथ पकड़ कर चल पड़ा । स्कूल पहुंच कर जब उसने अपनी टीचर को देखा तो खुशीसे उछल पड़ा । उसने टीचर को कहा कि मैं खो गया था पुलिस चाचा ने मुझे रास्ता दिखाया । टीचर ने छोटू के घर सूंचना पहुंचा दी। और पुलिसवाले को धन्यवाद दिया ।

दरजी और हाथी

एक दरज़ी था और एक हाथी था । दोनों में पक्की दोस्ती थी । हाथी दरज़ी को अपनी पीठ पर बैठा कर घुमाता था । दरज़ी भी हाथी को बहुत प्यार करता था । हाथी रोज़ तालाब में नहाने जाता था रास्ते में दरज़ी की दुकान पड़ती थी । वह दुकान पर रूक कर अपनी सूंड खिड़की से अन्दर करता और दरज़ी को सलाम करता । दरज़ी प्यार से उसकी सूंड सहलाता । फिर उससे एक केला लेकर हाथी चला जाता ।

हाथी तालाब में नहाता और लौटते समय दरज़ी के लिये एक फूल लेकर आता । फूल दरज़ी को देता और अपने घर चला जाता । एक दिन की बात है हाथी रोज की तरह नहाने जा रहा था रास्ते में वह दरज़ी की दुकान पर रूका । उसने अपनी सूंड खिड़की से अंदर की । अंदर दरज़ी बैठा सुई से कुछ सिल रहा था । दरज़ी को उस दिन एक मजाक सूझा । उसने हाथी की सूंड में सुई चुभो दी ।

हाथी को अपने दोस्त के इस मजाक पर बहुत गुस्सा आया पर वह चुपचाप वहां से चला गया । हाथी तालाब में नहाया पर उसने अपने दोस्त के लिए फूल नहीं लिया । रास्ते में वह दरज़ी के दुकान पर रूका । हाथी ने अपनी सूंड खिड़की से अंदर की । दरजी ने सोचा कि हाथी उसके लिए फूल लाया होगा । पर उस दिन हाथी सूंड में तालाब से कीचड़ और पानी भरकर लाया था । हाथी ने सारा पानी और कीचड़ दरज़ी के ऊपर उड़ेल दिया । दरज़ी देखता रह गया । दुकान के सारे नए कपड़े कीचड़ से सनकर गंदे हो गए ।

चुनमुन चिड़िया व किसान

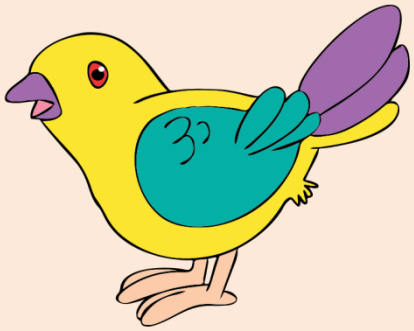

एक था किसान – उसका नाम था होरी। होरी ने अपने खेत में बीज बोया। कुछ चिड़ियॉ खुशी–खुशी से चीं चीं करने लगी और उछल–कूद कर खेत में दाना बीन–बीन कर खाने लगी। होरी ने चिड़ियॉ का दाना बीनते देखा तो जोर जोर से ताली बजाकर उन को भगाने लगा । सब चिड़ियॉ फुर्र से उड़ गयी लेकिन एक चिड़ियॉ नहीं गयी, उसने होरी से कहा –

चुनमुन चिड़िया मेरा नाम

दाना चुगना मेरा काम ।

मैं क्यों जाऊॅ, नहीं जाऊॅगी, अगर उड़ी तो मैं क्या खाऊॅगी। यह सुनकर होरी बोला – बड़ी जिद्दी चिड़िया है तू ठहर मैं अभी बताता हूॅ तूझे, होरी ने झटपट उस चिड़िया के ऊपर जाल फेंक दिया, चिड़िया जाल में फस गई। होरी ने चिडिया को पकड़ लिया और पिंजरे में बंद कर दिया। होरी उसे अपने घर ले गया और दरवाजे पर टॉग दिया । अब उस चिड़िया को जो भी वहॉ से

आता–जाता दिखाई देता, उससे कहती भइया, मुझे पिंजरे से बाहर निकाल दो, लेकिन कोई चिड़िया की बात पर ध्यान नहीं देता ।

एक दिन चिड़िया ने देखा हाथी पर सवार करता एक आदमी उसकी ओर आ रहा है जैसे ही वह पास आया चिड़िया रोने लगी और बोली

हाथी ऊपर बैठे राम, चुनमुन चुनमुन
सबने दाना खाया राम, चुनमुन चुनमुन
हम ही अकेले रह गए राम, चुनमुन चुनमुन
भूखे बच्चे रोये राम, चुनमुन चुनमुन

हाथी के ऊपर बैठे आदमी ने चिड़िया की बात सुनी और आगे बढ़ गया । चिड़िया उदास होकर फिर एक ओर पिंजरे में बैठ गई। अचानक उसने देखा कि सामने से घोड़े पर बैठा एक आदमी आ रहा है। चिड़िया जोर से बोली –

घोड़े वाले भइया घोड़े वाले भइया
सबने दाना खाया राम, चुनमुन चुनमुन
हम ही अकेले रह गए राम, चुनमुन चुनमुन
भूखे बच्चे रोये राम, चुनमुन चुनमुन

घुड़सवार ने भी चिड़िया की बात नहीं सुनी, वह सरपट घोड़ा दौड़ाता वहॉ से निकल गया, चिड़िया फिर से रोने लगी तभी चिड़िया को सामने से एक बुढ़िया (दादी मॉ) आती दिखाई दी, चिड़िया बोली

मेरी बुढ़िया दादी राम चुनमुन – चुनमुन
सबने दाना खाया राम, चुनमुन चुनमुन
हम ही अकेले रह गए राम, चुनमुन चुनमुन

भूखे बच्चे रोये राम, चुनमुन चुनमुन

और चिड़िया फूट फूट कर रोने लगी। बुढ़िया दादी को दया आ गयी उसने होरी को बुलाया और कहा – देखो बेटा चिड़िया बहुत रो रही है उसके बच्चे भूखें होंगे पिंजरे से इस निकाल कर आजाद कर दो हमें पशु पक्षियों से बहुत प्यार करना चाहिए बेटा । इन्हें दुख देना अच्छी बात नहीं है।

दादी की बात मान कर होरी ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया चुनमुन चिड़िया चीं चीं करती खुले आसमान में उड़ गयी और कहा धन्यवाद दादी – ऊँचे खूब उड़ गयी ।

बूझो पहेलियां

1 चार टांगों का मैं पहलवान
दिन भर बोझा ढोता हूं
डें चू – डें चू करता हूं ।

2 लम्बी हूं मैं पतली हूं
छुक–छुक–छुक चलती हूं।

3 पौं पौं करना मुझे है भाता
दुनिया की मैं सैर कराता
चार पहियों पर चलता हूं
ड्राइवर से मैं डरता हूं ।

4 ठंडी हवा में देता हूं
छाया भी मैं देता हूं
एक जगह पर रहता हूं ।

5 घर पर आऊं चूहे खाऊं
और दूध भी मैं पी जाऊं
बोलो तो मैं कौन हूं ।

6 मालिक की मैं सेवा करता
दिन भर आगे पीछे फिरता
घर की मैं रखवाली करता ।

7 पतली सी मैं दिखती हूं
दुम के सहारे चलती हूं
सुबह–शाम मैं सिलती हूं ।

8 छोटी सी मैं लड़की हूं
परांदा डाले फिरती हूं
कपड़े सिल कर देती हूं ।

9 न हाथ है न पैर है
ऊपर ही मैं जाता हूं
हल्का फुल्का होता हूं
बताओ तो मैं क्या हूं ।

10 वर्षा में मैं आता हूं
पर भिगोता नहीं
धूप में भी जाता हूं
पर तपता नहीं ।

11 तीन कमान से बनती हूं
रंग बिरंगी प्यारी हूं
पूंछ के बल चलती हूं
हवा में मैं उड़ती हूं ।

12 ट्रिन–3 मैं बजूं दिन–रात
हैलो कौन है करूं मैं बात
चाहे दिल्ली हो या हवालात ।

13 डम–डम–डम मुझे बजाते
सब इसकी धुन पर हैं नाचें
जहां मैं जाऊं मचाऊं
चारों तरफ मैं खुषियां लाऊं ।

14 शरबत मैं मैं पड़ता हूं
सबकी प्यास बुझाता हूं
जिस बर्तन में मुझको डालो
उसी आकार में दिखता हूं ।

15 बड़े बड़े हैं कान मेरे
लम्बी लम्बी सूंड
मस्ती से चलना मुझे हैं भाता
गन्ना पत्ती मैं हूं खाता ।

16 फुदक फुदक कर चलता हूं
गाजर पत्ता खाता हूं
लम्बे लम्बे कान हैं मेरे
बच्चों को मैं भाता हूं ।

17 नकल करना मुझे है आता
डमरू पर मैं नाच दिखाता
खौं खौं कर सबको डराता
बच्चों का मैं मन बहलाता ।

18 चार टांगों की मैं हूं जानवर
दो हैं मेरे सींग
घास दाना चारा मैं खाती
सबको हूं मैं दूध पिलाती ।

19 जंगल का मैं राजा हूं
जारों से गुर्राता हूं
जानवरों को खाता हूं
भूरे भूरे रंग का हूं ।

20 खेत जाना मेरा काम
चाहे हो सुबह याषाम
किसानरखता मेरा ध्यान
मेरे बिना न उनका काम ।

21.हरी थी मन भरी थी
राजा जी के बाग में
दुशाला उड़े खड़ी थी

22 एक बार नौ रेगी चंगी
छः नाड़े लटकाती है
भरे बाजार में मारे कब्बडी
वो भी नारे कहलाती है

23 काले मुह भरे कुलाचे,
उल्टा हो उंगली पर नाचे
जब लगाये डुबकी तब
दिल का हाल बताए चुपकी

24 पतली गली रस से भरी (

25 सरसर चलती जाए
अण्डे बच्चे देजी जाए

26 रेशमी की थैली में
सोने के बीज

27 पतली– पतली कामनी
केसर का सा रंग
ग्यारह देवर छोड़कर
गयी जेठ के संग

28 एक थाल मोती से भरा

पहेलियों के उत्तर

1 गधा
2 रेलगाड़ी
3 बस
4 पेड़
5 बिल्ली
6 कुत्ता
7 सुईधागा
8 सुईधागा
9 धुआं
10 छाता
11 पतंग
12 टेलीफोन
13 ढोलक
14 पानी
15 हाथी
16 खरगोश
17 बन्दर
18 गाय
19 शेर
20 बैल
21 भुटटा
22 तराजू
23 कलम दवात
24 चमेली
25 सिलाई मशीन
26 मिर्ची
27 अरहर का दाल
28 तारे

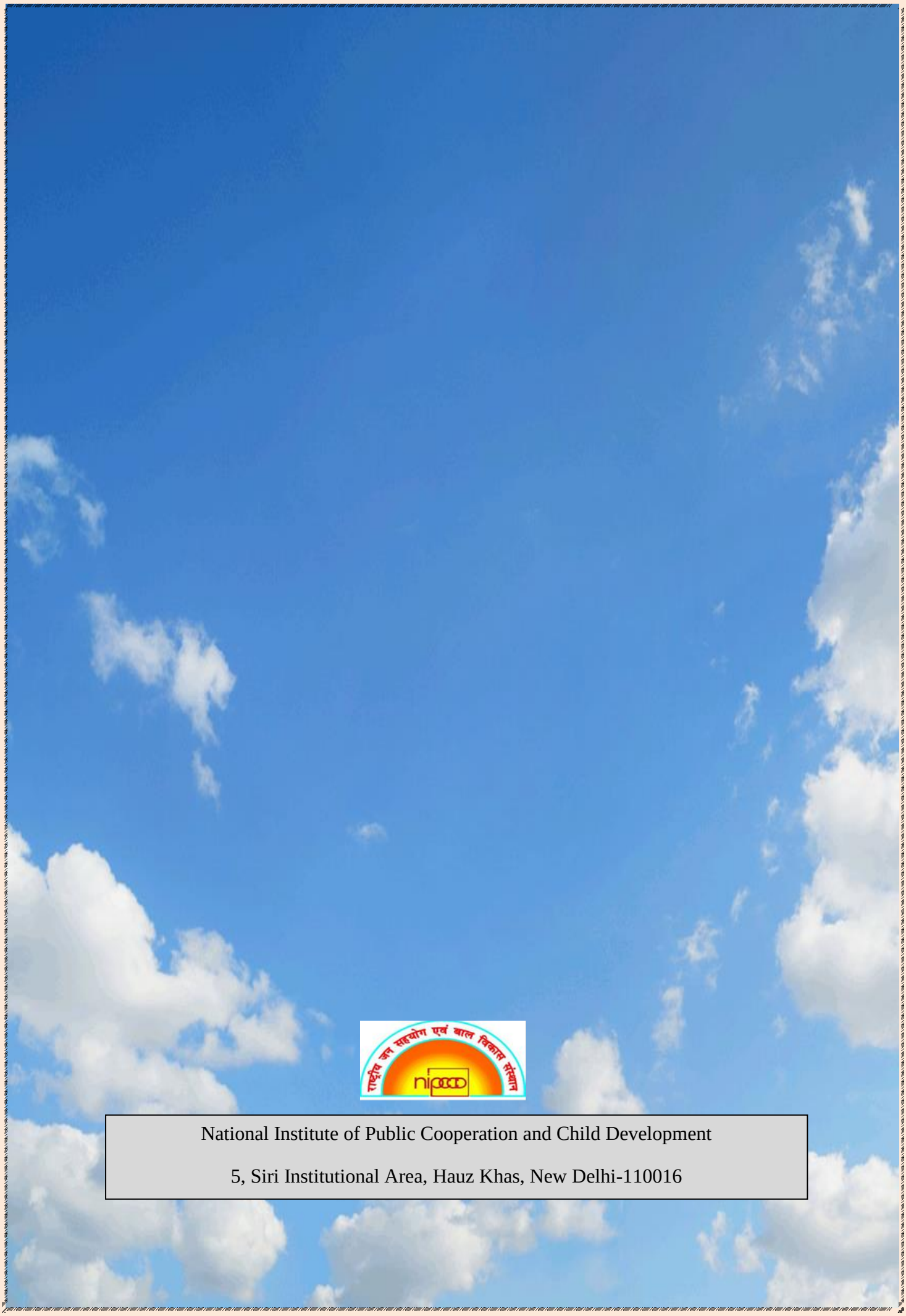

National Institute of Public Cooperation and Child Development

5, Siri Institutional Area, Hauz Khas, New Delhi-110016